



શ્રી શત્રુંજ્ય - મુક્તિ સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસક્રમ

C/o. શાહ ગોવિંદજી વીરમ, ફેક્ટરી કમ્પાઉન્ડ, મોટા રોડ, ઔરંગાબાદ - ૪૩૧ ૦૦૧.

સમ્યગ્જ્ઞાન વિશારદ

Answer Sheet
2020-21

◆◆ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ◆◆

એનરોલમેન્ટ નંબર:

૨

ગામ:

વિદ્યાર્થીનું નામ:

પ્રશ્ન-૧ ખાતી જવાબ

- (૧) હંવલા
- (૨) વસુદેવચિરિય
- (૩) માલલર
- (૪) યદ્યાપ્રધાતિકરણ
- (૫) દશપુર
- (૬) આહારકશારીર
- (૭) જિથ
- (૮) કર્મબાંધના
- (૯) આનિતામ-સ્વરિકૃત્ય
- (૧૦) વૈભારગિરિ
- (૧૧) અપૂર્વકરણ
- (૧૨) ઉપશામ
- (૧૩) ક્ષાયોપરામિક
- (૧૪) સુજીતા
- (૧૫) ડામી
- (૧૬) શ્રિઅભરણ
- (૧૭) અપ્રદ્યાપ્યાની
- (૧૮) ક્ષાયોપરામિક
- (૧૯) સંદ્ય બહાર
- (૨૦) મિદ્યાંદ્ય

પ્રશ્ન-૨ એક જ શરૂઆતી:

- (૧) સિંહ
- (૨) વરદાન
- (૩) અંતર્મૂર્ખ
- (૪) અભય્યા જીવો ને
- (૫) વંતર દેવ
- (૬) પાપ ને
- (૭) આર્થિકાગિરિ
- (૮) બદી દીપ
- (૯) સર્વાધીસિદ્ધ
- (૧૦) આગામ
- (૧૧) ધર્મલોધ
- (૧૨) સંવેગ
- (૧૩) બંદુ
- (૧૪) મનુષ્ય
- (૧૫) રંગાંભલ

પ્રશ્ન-૩ શરૂઆતી:

- (૧) ભાલાચી
- (૨) મૃત્યુ / મરણી
- (૩) કાંઈકાયેછ
- (૪) બોધ્ય

(૫)

રિંદ

(૬)

ઉલ્લંઘ

(૭)

નમદ / મિંદુ

(૮)

લોચ

(૯)

ઉત્તર વૈનિકય

(૧૦)

કાસ્તો ને

(૧૧)

મર્યાદ્ર

(૧૨)

પહેલા

(૧૩)

સુલદો

(૧૪)

લાંબી

(૧૫)

ફાયી

(૧૬)

કુંદું

(૧૭)

બ્રમણું

(૧૮)

લિકણા

(૧૯)

હું સુનિપણિ

(૨૦)

જાદનચ

પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ

(૧)

૭

(૨)

૧૭૦

(૩)

૧૧

(૪)

૬૬

(૫)

૧૮

(૬)

૭૪

(૭)

૨૧

(૮)

૪૫

(૯)

૯૦૦

(૧૦)

૫૨

પ્રશ્ન-૬ અનુભૂતિ
ક્રમ પાઠ તે નાથ

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

X

✓

प्रश्न - ८ अनिवृत्तिभरणा ना संज्ञाता आगे अतीत थाय जने छेल्सो संव्यातमो भाग आही रहे त्यारे जुव अंतरङ्गरणा डरे छे. अंतरङ्गरणा येटले जुव ने मिथ्यात्व सोहनीय कर्म ना पुढीलो ना
१ उद्य मां अंतर पाडवुं-गाबडुं पाडवुं पडे, तेमने उपशमाववा अंतरङ्गरणा उखुं आवश्यक छे.

अंतरङ्गरणा डरवा जुव ने मिथ्यात्व ना ठे हणिया उद्य मां आववाना छे. येदिया ने जुव उपर ना दिण्या मां अथवा नीचे ना दिण्या मां नांचे छे. तेथी वृक्षे खाली झग्या निर्माण थाय छे. वृक्षे नी खाली झग्या मां झवने भिन्ने नो उद्यनथी. तेथी अहिंया जुव ने आत्मा नो समाइल गुण प्रगट थाय छे. तेथी प्रथम उपशम सम्यक्त्व नी प्राप्ति थाय छे. ये अंतरङ्गरणा नो समय अंतर्मुक्त नो छे. ये पुर्ण आवश्यक अंतरङ्गरणा नी सम्यक्त्व पण ठेनही. डारणा भिन्ने नो उद्यनथी याची. खाली अंतरङ्गरणा डरेलो हलो.

२. शिर्द्वा-विधा नंबे वस्तु ओढा दृश्यावर्ती नो अव्यास डुरावो छे. रथ्युलभ्रमुनिये विद्वा नो उपयोग फेतानी जेहो ने सिंहु लो दूप छेमसी ज्वनावी ने देवाड्यो. परिणाम भद्रलाहुस्वामीये उपयोग दी जाण्यु. त्यार जाई रथ्यु. मु. वाघना देवा आव्या त्योरे विधारी सिंहु नो दूप ज्वनावनारा तेमने युग्मे छक्कुं लमे सुन्नपाठ माटे अयोग्य छो, येम डही पाठ न आण्यो. मुनिये पच्यात शूर्वष्ट इमा मांगी तेऱे युग्मे वाघना न आपी. श्री च्वामण संघनी विनंती ने मान आपी आ पाठ डेहीने पण न जापवानी वारले जाही नावार पूर्व रार्थ विनाना तेमने आप्या. रथ्यु. मु. छेल्सा योद्धवा सूर्ण थी थया. परिणाम झोल आव्युं शिर्द्वा नो दुरुपयोग न डरवो जोईझे.

३. शरीर द्वार-जौदारिष्ठ, वैष्णव, आहारक, तेजस अने डार्मणि ये पांच शरीर छेणे येसां मनुष्य ने जधाज पांचे शरीर होय छे. १ नारडी, असुरादि, व्यंतर, ज्योतिष, वैमानिष ने-वैष्णव, तेजस, डार्मणि त्रिशरीर होय छे. २ पृष्ठीष्ठाय, अपडाय, तेउडाय, वनस्पतिष्ठाय ने तथा जेईन्हिक्य, तेईन्हिक्य, वैरिन्हिक्य (विकलेन्हिक्य) ने त्रायाशरीर-जौदारिष्ठ, तेजस, डार्मणि होय छे. ३ वायुजाय अने गर्भाज्ञ तिर्यक्य पंचेन्हिक्य ने जौदारिष्ठ, वैष्णव, तेजस अने डार्मणि ये यार शरीर होय छे.

४. छ डाय जुवो येटले पृथ्वीहाय, अपडाय, वैउडाय, वायुजाय, वनस्पतिष्ठाय अन जासळाय जा छ डाय ना जुवो नी डाणलु डरवा साधु ने मावतर-पियर नी उपमा जापवामां जावी छे. येम माता पोताना जागड नी संलाभ राजवा त्याग अने घटिवान जापी शांडे छे. तेम साधु जा छ डाय जुवो ना जे मावतर जन्या होय येमदो जा जुवो ने जन्याववा समय जावे पोताना प्राणी नी बाजु पण लगाडवी पडे तो पोताना प्राणी ना भोडे जावे छे. तोज्ज सेनी साधुला शोली उठे अेवी डाणलु ले छे.

५. कोध पामेलो सिंह-रमजिन जेवा नेत्रवाणा, जेहो अतिमुख इड्यु घेअवेवा, मोटी डाया वाणा अने जेहो नमश्ची वज्र ना घातची गजेन्द्र-हाथी ना दुंभरथण ना विस्तार ने विद्वारेला छे. येवा कोध पामेलो सिंह होय छे. येवा सिंह ने श्रीप्रस्तर्वनाय प्रभु ने प्रणाम डरता आदू सहिल शाजायोमां नमृप मणिमाणेड मां जेनां प्रतिनिंद पडेला छे. येवा तमारा वचनद्रप शास्त्रो ने धारणा डरनारा पुरुषो जाणता नदी.